Vitaly Bianki
विताली बियांकी
जंगल के घर
Forest Homes
चित्र: टी. कोवल्योवा,
हिंदी: अरविन्द गुप्ता
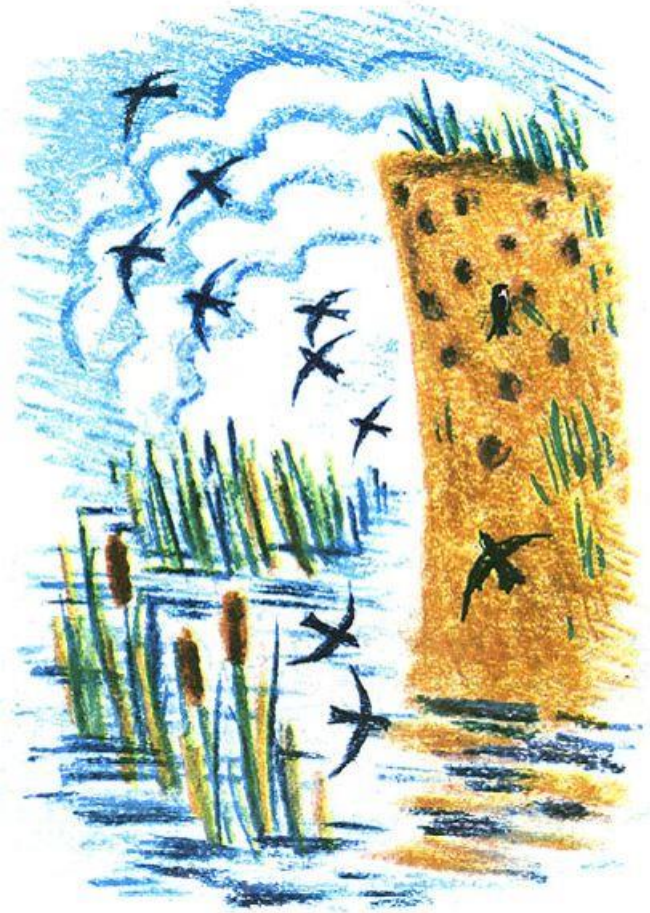
नदी के ऊपर, एक खड़ी चट्टान के ऊपर, युवा निगल (स्वैलो) पक्षी एक-दूसरे का पीछा करते हुए, चिल्लाते और चहचहाते हुए आगे-पीछे उड़ रहे थे. वे हवा में पकड़ा-पकड़ी खेल रहे थे. छोटी निगल इतनी तेज़ थी कि कोई भी उसे पकड़ नहीं पाया. वो हमेशा चकमा देकर भागने में कामयाब रहती थी. वो इधर-उधर, ऊपर-नीचे, इतनी तेजी से उड़ती थी कि उसके पंख एक पल के लिए भी फड़फड़ाना बंद नहीं करते थे.

फिर अचानक, एक बाज़ नीले आकाश में दिखाई दिया. हवा उसके तेज़-घुमावदार पंखों के बीच से सीटी बजा रही थी.

बाज़ को देख निगलों का झुंड आतंकित हुआ. वे तुरंत तितर-बितर हो गए, प्रत्येक निगल अलग-अलग दिशा में उड़ गया. आंख झपकते ही, वे सभी गायब हो गये.

छोटी निगल ने एक बार भी पीछे मुड़कर नहीं देखा. वो तेज़ी से नदी, जंगल और झील पार कर गई. बाज़, पकड़ा-पकड़ी खेलने के लिए एक बहुत ही खतरनाक पक्षी था.

छोटी निगल तब तक उड़ती रही जब तक उसमें आगे तक उड़ने की ताकत ही नहीं बची. फिर उसने पीछे मुड़कर देखा. अब उसका कोई भी पीछा नहीं कर रहा था. लेकिन वो एक अजीब और अनजान जगह पर थी. उसने एक नदी देखी, लेकिन वो उसकी परिचित नदी नहीं थी. उसने उसे पहले कभी नहीं देखा था.
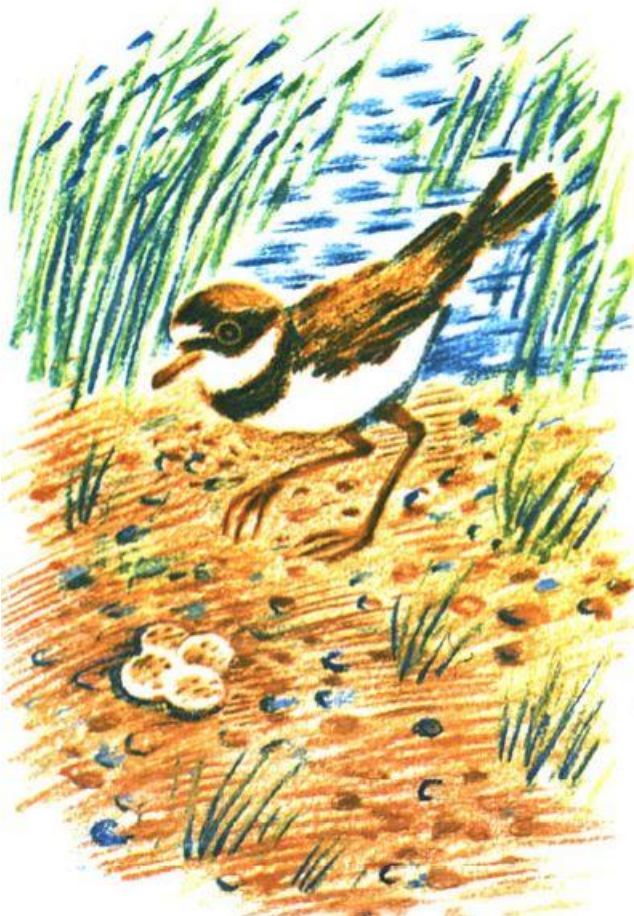
छोटी निगल डर गई. अब उसे घर वापस जाने का रास्ता याद नहीं आ रहा था और उसमें कोई आश्चर्य की बात भी नहीं थी. वो इतनी डरी हुई थी कि वो कहां थी अपना अतापता जानने के लिए उसने कभी इधर-उधर मुड़कर तक नहीं देखा था.

जल्द ही शाम हो जाएगी. फिर वो क्या करेगी?

फिर वो उड़कर नीचे उतरी, एक टहनी पर बैठी और फूट-फूटकर रोने लगी. अचानक, उसने रेत पर दौड़ती हुई एक छोटी सी पीली चिड़िया को अपनी ओर आते हुए देखा. छोटी निगल यह देखकर बहुत खुश हुई, "क्या आप कृपया मुझे बताएंगे कि मैं घर कैसे पहुचूं?" उसने पूछा.

"तुम कहां से आई हो?"

"मुझे नहीं पता."

"तो आज रात फिर तुम मेरे घर पर क्यों नहीं रुकती? मेरा नाम प्लोवर है, और मैं पास में ही रहता हूं."

प्लोवर कुछ कदम दूर भागा और उसने अपनी चोंच रेत की ओर उठाई. फिर वो झुका, और अपनी धुरीदार टांगों पर झूलते हुए बोला, "यह मेरा घर है. अंदर आओ."

छोटी निगल ने ध्यान से देखा, लेकिन उसे घर जैसी कोई भी चीज़ दिखाई नहीं दी, क्योंकि वहां बस रेत और कंकड़ थे.

"क्या तुम इसे नहीं देख सकतीं? यहां पर, जहां मेरे अंडे हैं." अंततः छोटी निगल को चार धब्बेदार अंडे दिखाई दिए.

"क्यों क्या बात है? क्या तुम्हें मेरा घर पसंद नहीं आया?"

छोटी निगल को समझ नहीं आ रहा था कि वो क्या कहे. अगर वो कहती कि वो कोई घर ही नहीं था तो प्लोवर को ज़रूर दुःख होता. इसलिए उसने कहा, "देखो, मुझे ठंडी रेत पर और खुले में सोने की आदत नहीं है."

"यह बहुत बुरा है. तो फिर तुम वहां देवदार के जंगल में कबूतर का घर आज़माओ. उसके पास एक मंजिल वाला घर है. वहां तुम अपनी रात बिता सकती हो."

"धन्यवाद."

फिर छोटी निगल देवदार के जंगल की ओर उड़ी. उसे कबूतर को ढूंढने में कोई परेशानी नहीं हुई और उसने कबूतर से उसके घर पर रात को रहने के लिए पूछा.

"ठीक है, अगर तुम्हें मेरा घर पसंद है तो तुम यहां रह सकती हो."

दरअसल, उसके घर में सिर्फ एक फर्श था. घर छलनी के समान छेदों से भरा हुआ था. जिसमें कबूतर ने बस कैसे करके कुछ टहनियां फेंकी थीं.

छोटी निगल आश्चर्यचकित हुई. "आपके घर में केवल फर्श है. आपके घर में कोई दीवार नहीं है. आप वहां पर कैसे सोते हैं?"

"ठीक है, अगर तुम ऐसा घर चाहती हो जिसमें दीवारें हों, तो बेहतर होगा कि तुम ओरिओल के घर जाओ. मुझे लगता है कि तुम्हें वो ज़रूर पसंद आएगा."

कबूतर ने छोटी निगल को पता बताया जो पेड़ों के झुरमुटे में सबसे सुंदर भोजपत्र का पेड़ था. छोटी निगल भोजपत्रों की ओर उड़ी. वहां के सभी पेड़ उसे सुन्दर लग रहे थे. उसने ओरिओले के घर की बहुत तलाश की. तभी उसे एक छोटी सी शाखा से जुड़ा हुआ एक प्यारा सा घर दिखाई दिया. वो बहुत आरामदायक लग रहा था और बिल्कुल भूरे कागज के बारीक टुकड़ों से गुलाब के आकार जैसा लग रहा था.

"ओरिओल का घर कितना छोटा है! इसमें मेरे लिए बिल्कुल भी जगह नहीं होगी," छोटी निगल ने खुद से कहा. फिर भी, उसने दस्तक देने का फैसला किया. उसी क्षण, छोटे भूरे घर से ततैयों का एक झुंड भिनभिनाता हुआ बाहर निकला.
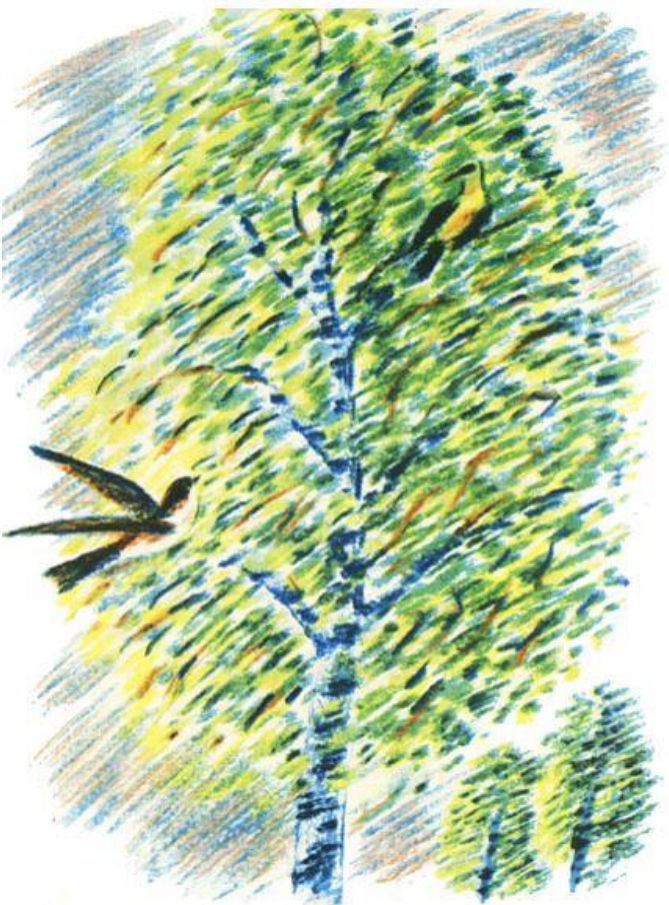
ततैये उसके चारों ओर झुंड में और गुस्से में भिनभिनाने लगे. ऐसा लग रहा था जैसे वे उसे डंक मारेंगे.

छोटी निगल से जितनी तेजी से बना वो उनसे दूर उड़ गई!

अचानक उसके सामने कोई सुनहरी और काली चीज़ चमकी.

फिर छोटी निगल ने एक शाखा पर काले पंखों वाला एक सुनहरा पक्षी देखा.

"तुम इतनी जल्दी कहां जा रही हो, छोटी निगल?"

"मैं ओरिओल के घर की तलाश कर रही हूं."

"मैं ही ओरिओल हूं. मेरा घर इसी खूबसूरत भोजपत्र के पेड़ पर है."

छोटी निगल ने उस स्थान की ओर देखा, लेकिन उसे पेड़ की हरी पत्तियों और सफेद शाखाओं के अलावा वहां और कुछ भी दिखाई नहीं दिया. जब उसने वास्तव में अच्छी तरह से देखा तो फिर वो हांफने लगी.

वहां, जमीन से काफी ऊपर, एक छोटी सी शाखा से एक हल्की, जेब के आकार की टोकरी जुड़ी हुई थी. उसे रेशों, घास, ऊन और बालों के धागों और कागज़ जैसी पतली भोजपत्र की छाल के टुकड़ों से खूबसूरती से बुना गया था.

"ओह! मैं इतने कमज़ोर घर में कभी नहीं रहूंगी! उसे हवा में झूलते हुए देखकर ही मेरा सिर अभी से चकरा रहा है!"

गोल्डन ओरिओल ने आहत होकर कहा, "फिर तुम शिफ-चैफ्स के घर जाओ. तुम्हें शायद उसका तंबू पसंद आएगा, क्योंकि उसमें एक छत भी है."

फिर छोटी निगल शिफ-चैफ्स के घर के लिए रवाना हुई.

शिफ-चैफ, भोजपत्र के पेड़ के पास घास में रहता था.

छोटी निगल को उसका तंबू पसंद आया जो सूखी घास और काई से बना था. "वो कितना आरामदायक है! उसमें फर्श और दीवारें, एक छत और एक पंखों वाला बिस्तर है. वो बिल्कुल मेरे घर की तरह है."

शिफ-चैफ एक दोस्त को पाकर बहुत खुश हुए. लेकिन तभी ज़मीन कांपने लगी. छोटी निगल डर गई. उसने गड़गड़ाहट की आवाज़ सुनी, लेकिन शिफ़-चैफ़ ने कहा, "वो केवल कुछ घोड़े हैं जो बगीचे की ओर सरपट दौड़ रहे हैं."

"अगर किसी घोड़े ने आपके घोंसले पर पैर रख दिया तो क्या आपकी छत गिर जाएगी?"

शिफ़-चैफ़ ने उदास होकर हां में अपना सिर हिलाया.

"अरे, फिर तो यह एक भयानक जगह है!" छोटी निगल तंबू से बाहर निकल आई. "मुझे यहां पर नींद की एक झपकी भी नहीं आएगी! मेरा घर उससे कहीं अधिक सुरक्षित है."

"शायद तुम्हारे पास ग्रीबे बत्तख जैसा घर होगा," शिफ़-चैफ़ ने कहा. क्या मैं तुमको वहां ले चलूं?"

"हां!" और फिर वे ग्रीबे बत्तख को खोजने के लिए झील की ओर उड़े. वहां, पानी से घिरे नरकट वाले एक छोटे से द्वीप पर एक बड़े सिर वाला पक्षी रहता था. उसके सिर के पंख छोटे सींगों की तरह चिपके हुए थे.

शिफ़-चैफ़ ने छोटी निगल से अलविदा कहा.

ढेर के बीच में एक गड्ढा था और उस पर मुलायम दलदली घास बिछी हुई थी. उस पर ग्रीबे बत्तख के अंडे रखे थे. ग्रीबे बत्तख तैरते हुए द्वीप के किनारे पर बैठी हुई थी और झील के चारों ओर ऐसे घूम रही थी जैसे कि द्वीप एक नाव हो. छोटी निगल ने ग्रीबे बत्तख से पूछा कि क्या वो एक रात उसके द्वीप पर बिता सकती थी.

"मेरा घर कोई नाव नहीं है. देखो, जिस दिशा में हवा चलती है मेरा घर उसी दिशा में बह जाता है, इसलिए हम पूरी रात हिलते-डुलते रहते हैं."

"मुझे डर लग रहा है. मैं घर जाना चाहती हूं!"

ग्रीबे बत्तख गुस्सा हो गई. "अरे तुम्हें कोई भी जगह या घर पसंद नहीं आ रहा है! तुम किसी भी घर से खुश नहीं हो! ठीक है, तुम्हारी जहां मर्जी चाहे जाओ और अपना मनपसंद घर खोजो.

फिर छोटी निगल वहां से उड़ गई. वो फूट-फूट कर रो रही थी. जल्द ही उसने एक ऊंचे देवदार के पेड़ की एक बड़ी शाखा पर एक घना घर देखा. घर गोल था और वो लकड़ियों और शाखाओं से बना था. अंदर नरम, गर्म काई बिछी हुई थी. "बिल्कुल वैसी जगह जिसकी मुझे तलाश थी. वो मजबूत है और इसमें छत है." छोटी निगल ने अपनी चोंच से दीवार को थपथपाया और दयनीय स्वर में कहा, "क्या आप कृपया करके मुझे रात बिताने देंगे?"

अचानक उसे रोएंदार मूंछों और पीले दांतों वाला एक भयानक भूरा सिर दिखाई दिया. वो राक्षस गुर्राया: "अरे यह तो बताओ, कि चिड़िए कब से, गिलहरियों के घरों पर दस्तक देने लगी हैं?"
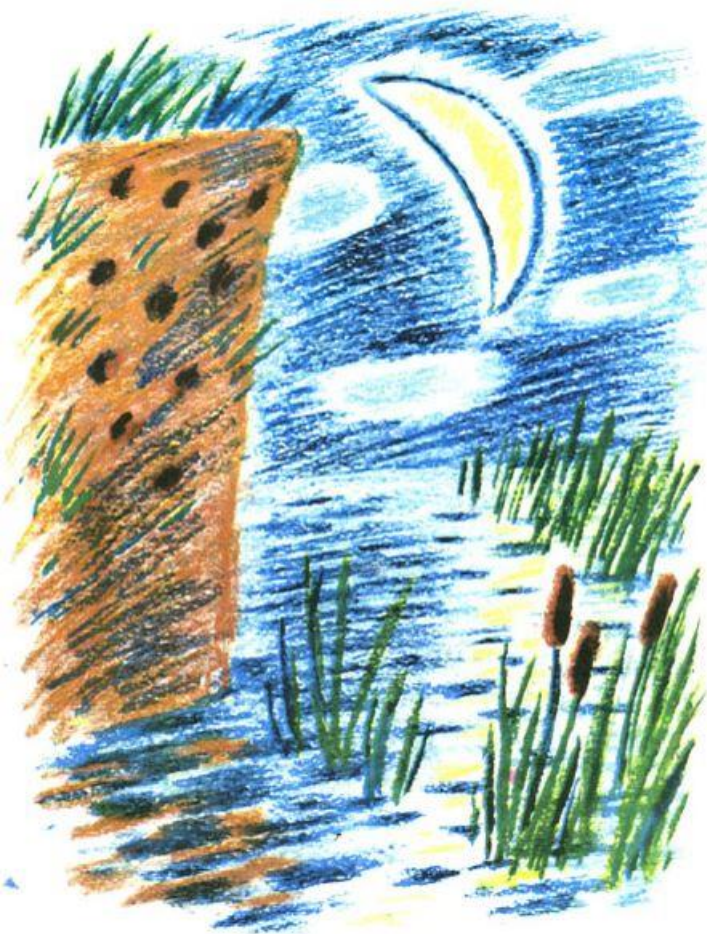
छोटी निगल को अब बहुत डर लग रहा था. उसका खून जम गया था. वो दूर जंगल के ऊपर उड़ी. वो जितनी तेजी से उड़ सकती थी वो उतनी तेज़ उड़ी और उसने एक बार भी पीछे मुड़कर नहीं देखा.

वो तब तक उड़ती रही जब तक उसमें आगे उड़ने की बिल्कुल ताकत नहीं बची. फिर उसने नीचे देखा तो उसे एक नदी दिखाई दी. वो उसकी अपनी जानी-पहचानी प्रिय नदी थी!

फिर उसने नदी की ओर गोता लगाया, और फिर वो खड़ी चट्टान की किनार पर चढ़ गई. और वहां जाकर वो गायब हो गई.

चट्टान के किनार पर तमाम छेद थे. प्रत्येक छेद में एक निगल का घोंसला था. वो उसमें कूदी और उसके अंत में वो एक गोल, विशाल मांद में जा गिरी. वहां पर उसकी मां उसका बेसब्री से इंतजार कर रही थी.

थकी हुई छोटी निगल उस रात सूखी घास, घोड़े के बालों और पंखों से बने अपने नरम, गर्म बिस्तर पर बहुत गहरी नींद सोई.

शुभ रात्रि.